

भैया मोंहि छोड़के वन को न जाओ ।

निज किंकर को न भुलाओ भुलाओ ।

भैया मेरी दिल को ठेस न लगाओ ॥

बचपन से हूं चरणों का चेरा मात पिता गुरु तूं सब मेरा
तेरे चरणों के दरस आनंद में भूल गया मैं सांझ सवेरा

सेवक को न ठुकराओ ठुकराओ ॥

मेरा इष्ट तुव पद सेवकाई सत्य कहूं यह प्रभू रघुराई
जाग्रत सुपन सुखोपति तुरिया राम राम की रट है लाई
पावन प्रेम निभाओ निभाओ ॥

मैं बालक तेरा प्रेम भिखारी धर्म नीति सुनि होय भय भारी
लोक परलोक परमपद मेरा तुम हो प्यारे अवध विहारी

और न बात सिखाओ सिखाओ ॥

तहां हैं अवध जहां है राम और ठौर नहीं काम
जीवन मेरा अधीन आपके सत्य कहूं स्वामी सुख धाम
प्राणनि पीड़ मिटाओ मिटाओ ॥

जल बिनु मछुली नाग बिनु मणि जीवन आधार आप रघुनन्दन

मैं भ्राता तुम बिनु नंहि जीऊं कृपा करो सन्तन उर चन्दन
अपना बिरदु बढाओ बढाओ ॥